



RNI No. UTTHIN/2003/10745

वर्ष 10, अंक 112, पृष्ठ 8, देहरादून, सितम्बर-अक्टूबर, 2021 1995 से सतत प्रकाशित

दीदी की चिट्ठी

प्यारे बच्चों,

आशा करती हूँ तुम जानते होगे कि शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) सभी शिक्षकों को सम्मान और आभार प्रकट करने का दिन है। हमारे दूसरे राष्ट्रपति डा. सर्वपल्ली राधा कृष्णन के जन्म दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। शिक्षक हमें अच्छे-बुरे में फर्क करना बताते हैं। हमारी कमियों को उजागर करके हमें सुधारने का साहस रखते हैं। और नई दिशा दिखाते हैं। ऐसे गुरु को हमेशा नमन करना दोस्तों! याद रखना शिक्षित हम केवल रोजगार के लिए नहीं होते हैं बल्कि अच्छे इंसान और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए भी।

इस अंक में जानें गंगा माँ से कि अन्य क्या-2 कारण थे गंगा में जल समाधि व भू समाधि के? बच्चों को वैक्सिन लगाने वाली है। हमने बच्चों के मन को टटोलने की कोशिश की और जानना चाहा कि आखिर वैक्सिन को लेकर उनके मन में क्या चल रहा है? पृष्ठ सं. 6-7 में जानें बच्चों के दिल से। अपने देश में होने वाले छोटे-छोटे आविष्कारों को भी जानना चाहिए (पृष्ठ सं. 2)। छोटे-छोटे अनाविष्कार देश की प्रगति में सहायक होते हैं।

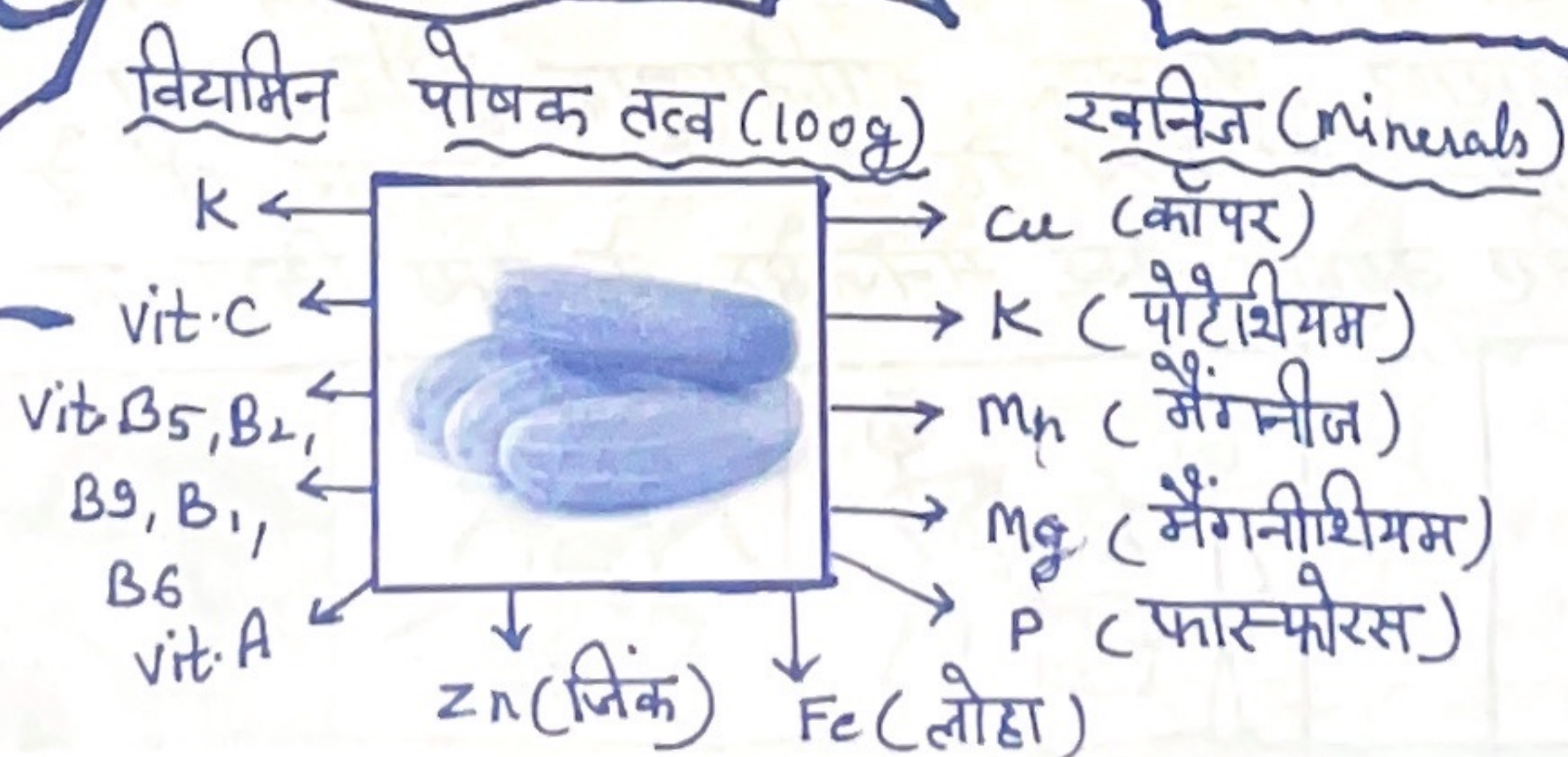
स्वस्थ रहो और खुश रहो इसी आशा के साथ फिर मुलाकात होगी अगले अंक में।

तुम्हारी दीदी,
सुधा

ओजोन
दिवस
16 सितंबर
2021

स्वास्थ्य
के
रसनाते

खीरा
Cucumber



○ इससे खाने से शरीर के अंदर की गर्मी कम होती है और शरीर ठंडा रहता है।

○ यह शरीर में श्रुतिक एसिड की मात्रा कम करता है।

○ खीरा खाने से छे विटामिन और खनिज दोनों मिलते हैं।

विज्ञान एवं पर्यावरण

बुलेट प्रूफ जैकेट



वेस्ट फूड से मछली का
भोजन व स्वाद

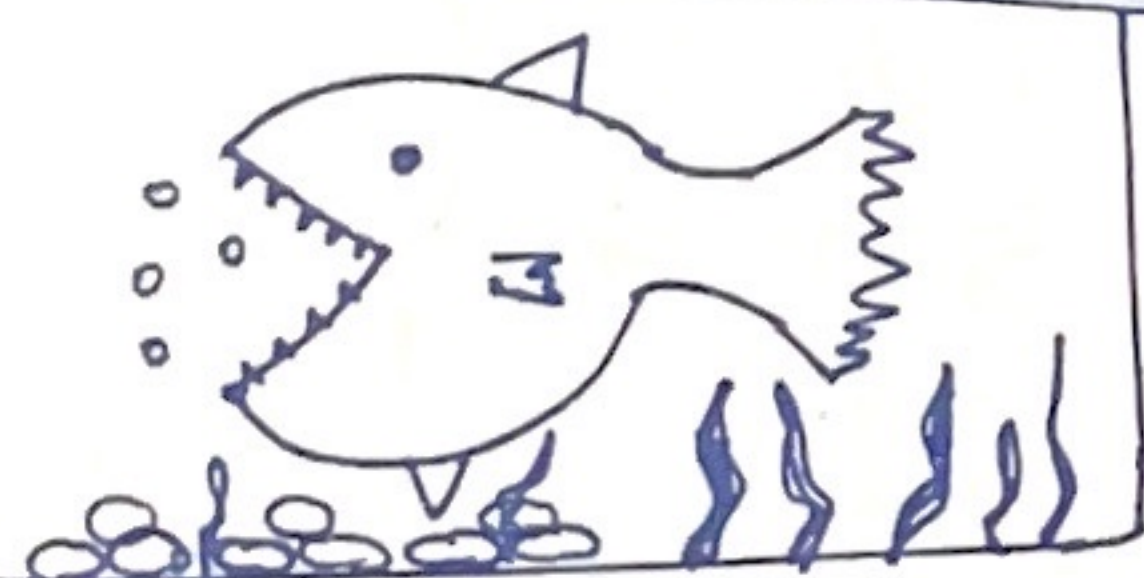
हमारे सैनिकों के लिए दल्लीसगढ़ के भित्तार्ड शहर की निजी कंपनी तैयार कर रही है हल्की बुलेट प्रूफ जैकेट। हमारे सैनिक पहले जो बुलेट प्रूफ जैकेट पहनते थे उसका वजन 11 किलो था। लेकिन अब जो जैकेट बनाई जा रही है वह 11 किलो की है। कीमत भी 40 फीसद कम है और गुणवत्ता भी पहले वाली से ज्यादा है।

भारतीय कंपनी प्रति वर्ष एक लाख जैकेट की आपूर्ति करेगी। इस विशेष स्वीडिश ब्रांड



जैकेट की तकनीक तैयार की है रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ DRDO) ने। इस जैकेट को बनाने में सिलिकॉन कार्बाइड का उपयोग किया गया है। यह स्टील से हल्का भी है और मजबूत भी।

पहले इजराइल, इंग्लैंड, फ्रांस और ग्रीस से बुलेट प्रूफ जैकेट मंगाई जाती थी। चीन से रिश्ते खराब होने की वजह से अब मंगाई नहीं जा रही है। अपने देश में बनाई गई जैकेट को पहनकर हमारे वीर सैनिकों की सुरक्षा बढ़ जायेगी।

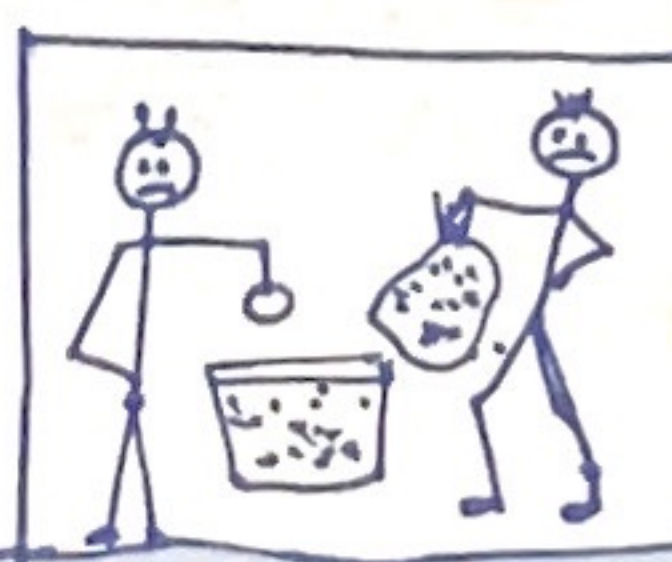


से काम शुरू किया था। अब रोजाना दो टन से ज्यादा वेस्ट से काम कर रहे हैं। और रोजाना 200 किलो से ज्यादा शोलजर फ्लाई वैदा की जाती है। कृषि मंत्रालय की तरफ से उन्हें 25 लाख की वित्तीय मदद भी मिल रही है। अब वे महाराष्ट्र, बेंगलूर, गाजियाबाद और अन्य बड़े शहरों में अपना प्लांट खोलने की सोच रहे हैं। और रोजगार भी दे रहे हैं। मछलियों के लिए आहार वेस्ट मैनेजमेंट के द्वारा किया जा रहा है।

हम लोग घर के स्क्वैरियम में जिन मछलियों को पालते हैं उनके आहार का 80% उत्पादन बाहरी देशों में होता है। जापान और चीन ज्यादा उत्पादन करते हैं। अंकित और उनके दोस्त अभि ने यह आइडिया विकसित किया था अपने स्टार्टअप में। महाराष्ट्र के जलगांव और रूडकी आईआईटी (I.I.T.) से शिक्षित हैं। उन्होंने वेस्ट फूड से स्वाद व बलैक शोलजर फ्लाई उत्पादित की।

लोकल सब्जी, होटल रेस्तरां आदि से फूड वेस्ट (बैकार स्वाद्य सामग्री) को उठाया जाता है। फिर फ्रीसेसिंग यूनिट में यह वेस्ट विशेष ट्रे में रखा जाता है। फिर इस ट्रे में बलैक शोलजर फ्लाई डाल देते हैं।

कुछ दिनों में इन कीड़ों की संख्या चार गुना से अधिक हो जाती है। उनका आकार और वजन भी बढ़ जाता है। इन्हें ट्रे से निकाल लेते हैं और फिर सफाई किया जाता है। साथ ही वेस्ट से तैयार स्वाद को भी बेचा जाता है। उन्होंने 500 किलो वेस्ट



गंगा में जलसमाधि व भूसमाधि क्यों? (भाग-2)



मैं गंगा जानती हूँ कोविड 19 की दूसरी लहर ने तुम सब मानवों को बहुत नुकसान पहुंचाया है। आर्थिक नुकसान तो हुआ ही है पर साथ ही मानसिक, शारीरिक व सामाजिक भी। अब तुम सोच रहे होगे सामाजिक कैसे? हम सब जानते हैं मानव एक सामाजिक प्राणी है। मिलना-जुलना, बर्तमाना यह सब तुम्हें अच्छा लगता है। पर कोरोना को यह सब बिलकुल पसंद नहीं। यह सब करने से वह फैलता है। इसलिए मानकों के हिसाब से मानव को सामाजिक दूरी (social distance) बनानी पड़ गई।

कुछ दिन की बात होती तो चलता। पर क्या करें यह मोया कोरोना वायरस बहुत दीट है। सेंध लगाकर बैठ है। जहां देखेगा लोगों की भीड़, वहां आ धमकेगा टूटे पांव और तुम लोगों को पता भी नहीं चलेगा। मैं जानती हूँ, मैं सब देख रही हूँ।

तुम सब उदास हो, चिंतित भी। बहुत लोगों ने अपने को खोया भी है। सब करो। हमारे वैज्ञानिक व सरकारी तंत्र कोशिश कर रहे हैं। मैंने देखा वैक्सीन आ गई है और बहुत लोगों को लग भी गई है। कई लोगों को अभी लगाना बाकी है। और हाँ, कुछ डर भी रहे हैं। उन्हें लगता है हम तो स्वस्थ हैं वैक्सीन क्यों लगाएँ? कहीं वैक्सीन से हमारा स्वास्थ्य खराब तो नहीं होगा? या फिर कहीं मर गए तो? इस तरह के फ़श्न मन में उठना वाजिब है। पर हे मानव! तू कब से डरने लगा? तू तो मृत्यु शरीर को गंगा में डालने से नहीं डरा, फिर वैक्सीन क्या चीज है?



एक सुई से डर रहा है। ही! ही! ही! दवाई है उसके अंदर जो तुम्हारे शरीर में जाकर तुम्हारे शरीर की प्रातिरोधक क्षमता (immunity) को दुस्त कर देगी। हाँ यह जरूर है कि कुछ मामूली लक्षण जैसे बुखार आना, सिरदर्द, जी मिचलाना, उल्टी, पांव दर्द आदि होने की संभावना है। पर मृत्यु नहीं होगी। विश्वास करो मेरा। हाँ जो बीमार हैं, जिनकी दवाई चल रही है, उन्हें डॉक्टर की सलाह से वैक्सीन लगवानी है। एक बात और वैक्सीन लगाने भूखे पेट नहीं जाना है। भरोसा रखना खाकर फिर वैक्सीन लगवानी है। जैसे ही बुखार महसूस हो तो झूठ से बुखार की दवाई खा लेनी है। याद रहेगा ना!



पिछले अंक में मैंने तुम्हें बताया था कि धार्मिक विश्वास व परंपरा भी वजह थी शवों को गंगा में बहाने की। कुछ और कारण भी थे जिनपर आज मैं बात करूंगी। वह थे - ② महंगा आंतिम संस्कार ③ लकड़ी की कमी ④ अन्य कारण

② महंगा आंतिम संस्कार :

मेरी इस बात को तुम सब स्वीकार करोगे कि लॉकडाउन की वजह से सब आर्थिक तंगी में थे, जैसे ही घर में किसी सदस्य की मृत्यु हुई तो आंतिम संस्कार का सामान जुटाना मुश्किल हो गया था। उस समय बाजार में हर सामान दुगुने दाम में मिल रहा था। अब सोचने वाली बात है कि जिस घर में तीन-चार लोगों की मृत्यु हो गई हो वो कहां से जुटाता आंतिम संस्कार की सामग्री? लकड़ी के दाम बढ़ गए थे, साथ ही डोम के लिए घी और अन्य सामग्रियों के लिए लगभग 4,500/- ₹० चाहिए थे। गहराई से सोचा जाये तो तंगी के हालात में कोई कहां से लाता इतना धन। मैं माँ हूँ समझ सकती हूँ अपने बच्चों की परेशानी।



मुझे माँ मानते हैं इसलिए उन्होंने अपने प्रियजनो के शवों को मेरी गोद में डालना बेहतर समझा। कोयना के डर से शव को घर वापिस ले जा सकते नहीं थे। यह भी दुर्विधा थी। कई जगह गांव वालों ने शवों को खेत में और घर के पास दफनाने नहीं दिया। यह भी समस्या मैंने देखी।

③ लकड़ी की कमी :

मैंने यह भी अनुभव किया कि उब दिनों गांवों में एक साथ इतनी मृत्यु हुई की लकड़ी की कमी हो गई। लकड़ी के दाम उबल हो गए थे। पहले बाटों पर लकड़ी आमतौर पर 600/- ₹० प्रति क्विंटल मिलती है और एक शव को जलाने के लिए 3 क्विंटल लकड़ी की आवश्यकता पड़ती है। मैंने देखा उस दौरान बाटों पर लकड़ी 1000/- ₹० क्विंटल मिल रही थी। यानि एक शव के लिए 3000/- ₹० दो, तब आपको 3 क्विंटल लकड़ी मिलेगी।



④ अन्य कारण :

मैंने देखा और सुना भी कि कई लोगों को देवाई नहीं मिली क्योंकि उस समय क्लीनिक बंद थे। इसलिए इलाज और दवा न मिलने के कारण भी कई मौत हुई। यह मौतें कोराना की वजह से नहीं हुई थी। कई ग्रामीण भाईयों का कहना था कि पहले गंगा तट किनारे रेत का झुल्ला बहुत बड़ा होता था। इसलिए कई लोग वहीं शव दफना देते थे। लेकिन अब गंगा किनारे तक साजियों की खेती की जा रही है। इसलिए दफनाने का क्षेत्र घट गया है। और शव अधिक दिख रहे हैं। ग्रामीणों में जब मेरा बहाव कम होता है तो शव किनारे आ जाते हैं।



मैं यही कहूंगी कि यह सब ग्रामीण भाईयों की मजबूरियां थी - कहीं परंपरा को निभाने की, तो कहीं आर्थिक तंगी की, तो कहीं क्षेत्रफल की कमी। जो दूर बैठे लोगों को समझनी होगी और विदेश बैठे लोगों को भी।



भारत में ग्रामीण संख्या लगभग 65% प्रतिष्ठित हैं और वह अपनी परंपराओं और मान्यताओं को निभाते हैं। यह बात हम सबको जाननी भी होगी और साथ ही समझनी भी। उनकी परिस्थिति और पारिस्थितिक समस्याओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। परिवर्तन अचानक से नहीं होगा और ना ही परम्पराओं और मान्यताओं में। इन सब को साथ लेकर हल निकालना होगा। जागरूकता, बातचीत और सहभागिता से ही हल निकलेगा। यही आशा मैं, गंगा माँ अपने पेटे लिखे लोगों से करती हूँ।

डा० सुधा शर्मा

क्या आप जानते हो?

उत्तराखण्ड में पंच प्रयाग हैं:

Q1. उत्तराखण्ड में कितने प्रयाग हैं?

उत्तर पांच (5)।

Q2. इन पांचों प्रयागों में किन-किन नदियों के संगम हैं?

उत्तर इन पांचों प्रयागों में गंगा की प्रमुख सहायक नदियों (tributaries) के संगम हैं।

Q3. पांचों प्रयागों के नाम बताइए?

उत्तर ① विष्णु प्रयाग ② नंद प्रयाग ③ कर्ण प्रयाग ④ रुद्रप्रयाग ⑤ देवप्रयाग

Q4. विष्णु प्रयाग में किन नदियों का संगम होता है?

उत्तर विष्णु प्रयाग में धौली व अलकनंदा नदी का संगम होता है।

Q5. नंद प्रयाग में किन नदियों का संगम होता है?

उत्तर नंद प्रयाग में अलकनंदा व नंदाकिनी नदी का संगम होता है।

Q6. कर्णप्रयाग में किन नदियों का संगम होता है?

उत्तर कर्णप्रयाग में अलकनंदा व पिंडर नदी का संगम होता है।

Q7. रुद्रप्रयाग में किन नदियों का संगम होता है?

उत्तर रुद्रप्रयाग में अलकनंदा व मंदाकिनी नदी का संगम होता है।

Q8. देवप्रयाग में किन नदियों का संगम होता है?

उत्तर देवप्रयाग में अलकनंदा व भागीरथी नदी का संगम होता है।

Q9. किस संगम को गंगा नाम दिया गया है?

उत्तर देवप्रयाग में अलकनंदा व भागीरथी नदी के संगम को गंगा नाम दिया गया है। यहां से जब नदी आगे चलती है तो उसे गंगा कहा जाता है।

पृष्ठ सं. 1 का शेष भाग

① खीरा खाने से पेशाब खुलकर आती है।

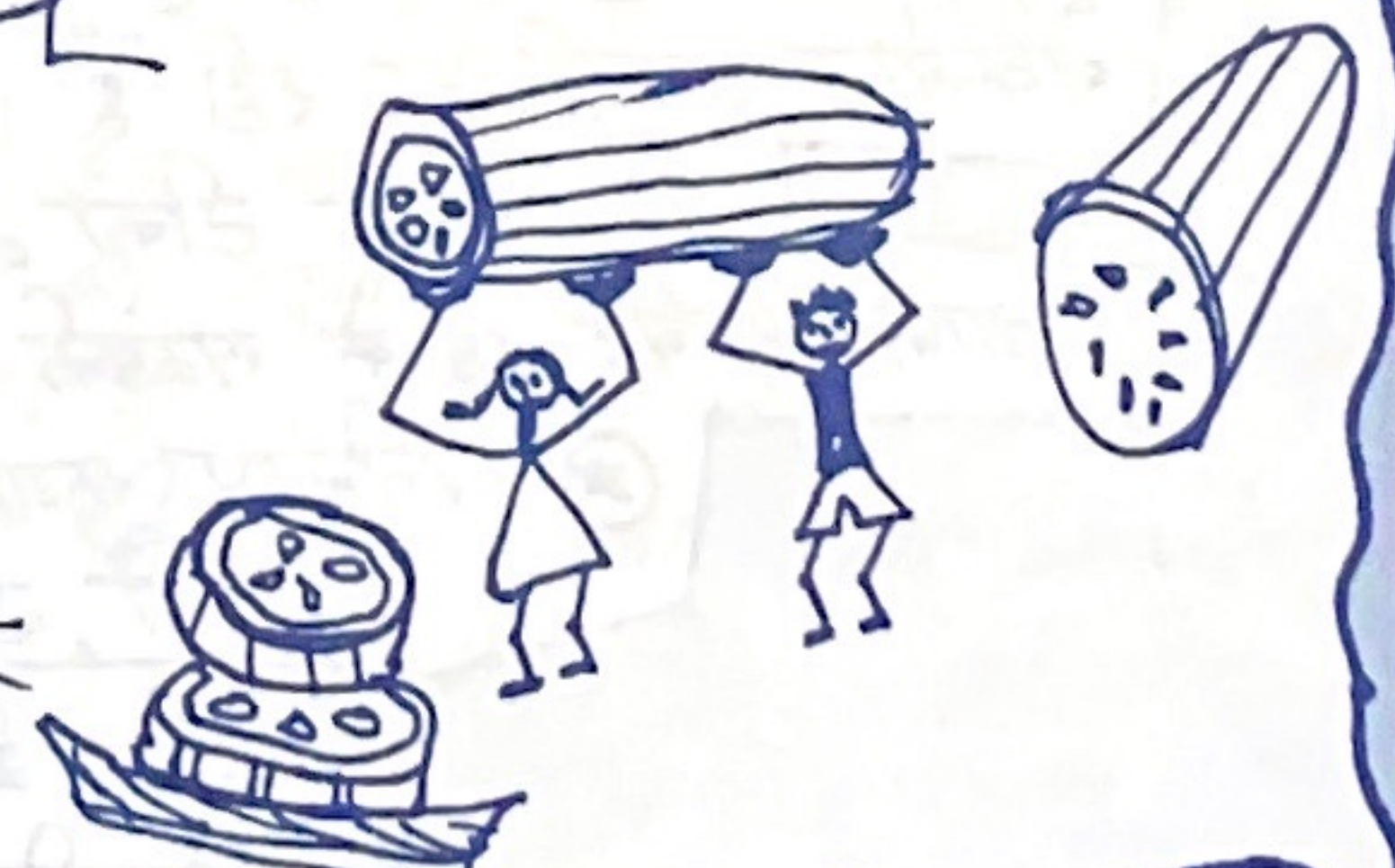
① यह मोटापा भी घटाता है क्योंकि इसमें

① पानी और फाइबर होता है।

① इसका सेवन हार्ड बलडप्रेसर को कम करता है।

① इसके रस को चेहरे में लगाने से झुलसी त्वचा चमक उठती है।

① गर्मियों में इसका सेवन करने से शरीर में पानी की कमी नहीं होती है। और खनिज और विटामिन दोनों मिलते हैं।



बाल प्रतिक्रियाएं

कोविड वैक्सीन (टीका)

क्या वैक्सीन लगाने से आपको डर लग रहा है?

क्या आप जानते हो कोविड की वैक्सीन बच्चों को क्यों लगाई जा रही है?

क्या टीका लगाने के बाद मास्क डालना होगा?

वैक्सीन लगाने से हमें डर इसलिए नहीं लग रहा है क्योंकि वैक्सीन हमें कोरोना की सुरक्षा के लिए लगाई जा रही है। महामारी से बचने के लिए। हाँ हम लोगों को टीका लगाने के बाद मास्क लगाना होगा। क्योंकि यह एक प्रकार की महामारी है। हमें हमेशा मास्क लगाना होगा और दो गज की दूरी भी।



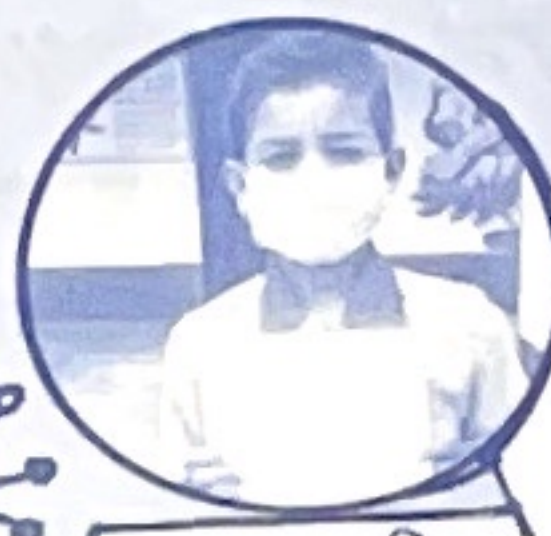
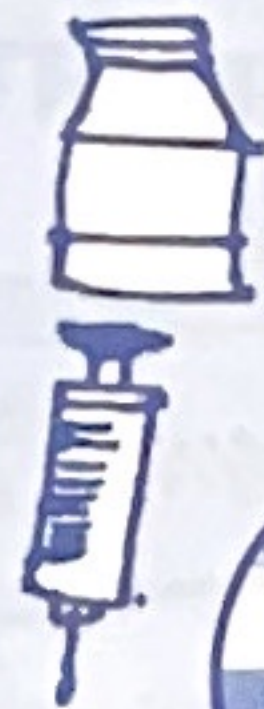
★ रविकान्त नागर
कक्षा-11, ए. के.
नैशनल इंटर कॉलेज,
औडिहार, गाजीपुर, गांव पटना
गाजीपुर, उ.प्र.

कारण बताएं



हाँ मुझे पता है कि कोविड की वैक्सीन बच्चों को क्यों लगाई जाएगी। कारण है कोरोना संक्रमण ज्यादा न फैले और महामारी उभादा न बदे।

★ अजय कुमार,
कक्षा-8, पूर्व मा.
वि. निवाड़ी खादर, गाम निवाड़ी
खतौक डिवाई, बुन्द शहर



हाँ, टीका लगाने के बाद मास्क लगाना होगा। क्योंकि कोविड 19 संक्रमण बढ़ने का डर है।

★ डौरीलाल कुमार
कक्षा-7,
गांव निवाड़ी खादर, पूर्व मा.
वि. निवाड़ी, नरौरा, बु.शहर

नहीं हमें वैक्सीन से डर नहीं लग रहा है। इसे लगाने से हम कोरोना वायरस को हरा सकते हैं और कोरोना वायरस के विरुद्ध देश को बचा सकते हैं। कोविड की वैक्सीन बच्चों को इसलिए लगानी जरूरी है ताकि बच्चों को कोविड-19 से बचा सके। और इससे बच्चों की इम्युनिटी पावर अच्छी रहे।



जी हाँ हमें वैक्सीन के बाद मास्क लगाना इसलिए जरूरी है कि हमें कोविड-19 का संक्रमण दुबारा न हो पाये।

★ कृष्ण कुमार निषाद, गंगा प्रहरी
ग्राम सरैया, पो. टेकुर, वाराणसी



वैक्सीन लगवाने से मुझे डर नहीं लग रहा है। क्योंकि मैं जानता हूँ वैक्सीन हमारे बचाव के लिए लगाई जा रही है।

★ धर्मेन्द्र कुमार, कक्षा-7,
पूर्व मा. वि., निवाड़ी खादर,
नरौरा, बु.शहर



हमें वैक्सीन लगवाने से कोई खतरा नहीं है। और हमें अनेकों प्रकार की बीमारियों से मुक्त होते हैं।

हाँ हम जानते हैं संक्रमण का खतरा कम हो इसलिए और कोविड से बचाव भी हो इसलिए वैक्सीन लगाई जा रही है।

जी मास्क टीका लगाने के बाद भी पहनना है। ताकि कोविड 19 के सम्पर्क से बच सकें।

★ विकास कुमार, B.A.I Year
वाराणसी, उ.प्र.



कोविड की वैक्सीन बच्चों को इसलिए लगाई जा रही है:

- 1) ताकि संक्रमण कम हो।
- 2) बीमारी के खिलाफ उस वायरस का हमला होने पर बच्चों का शरीर उससे लड़ सके।
- 3) बच्चों में

कोविड की तीसरी लहर ज्यादा खतरनाक बताई जा रही है इसलिए वैक्सीन लगाई जा रही है। (शेष पृष्ठ सं. 7 में ...)

कोविड की वैक्सीन (टीका)

कारण
बताएँ ?

बाल प्रतिक्रियाएँ

7

क्या वैक्सीन लगाने पर
आपको डर लग रहा है ?

क्या आप जानते हो
कोविड की वैक्सीन
बच्चों को क्यों लगाई
जा रही है ?

08-09-2021

हाँ मुझे वैक्सीन लगाने से डर लग रहा है। मैंने अपने मामा के लड़के को वैक्सीन लगाते देखा था। उसको दर्द हो रहा था। इसलिए मुझे डर लग रहा है। हाँ मैं लगाऊंगा क्योंकि हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी लगा रहे हैं हमारी सुरक्षा के लिए। टीका लगाने के बाद मास्क पहनना होगा। मेरे पापा ने बताया, वो भी डालते हैं।

✳ वंश वर्मा, कक्षा-6,
रा.उ.पा.वि.
मिर्जावाला, देहरादून



क्या टीका
लगाने के बाद
मास्क
डालना
होगा ?



हाँ मुझे वैक्सीन लगाने से डर लग रहा है। इसके बिना
कारण निम्नलिखित हैं:

- वैक्सीन लगाने से बुराट आ जाता है।
- कोरोना का सही तरीके से टीकाकरण होना चाहिए।
- बच्चों का टीकाकरण विद्यालय में होना चाहिए।

✳ वैष्णवी निषाद, कक्षा-11,
गांव सूजाबाद पड़ाव, वाराणसी



12-09-2021

- हाँ वैक्सीन लगाने से डर लग रहा है। क्योंकि मुझे स्तुई से डर लगता है।
- हाँ मैं जानता हूँ हम वैक्सीन क्यों लगाई जा रही है। वैक्सीन लगवाने से महामारी को बढ़ने से रोका जा सकता है।
- हाँ मास्क तो लगाना होगा। मास्क लगाने से हम स्वयं सुरक्षित रह सकते हैं और दूसरों को भी सुरक्षित रख सकते हैं।

✳ मश शर्मा, कक्षा-6,
बाल शिक्षा निकेतन,
गांव सूजाबाद पड़ाव, वाराणसी



12-09-2021



- हाँ मुझे डर लग रहा है क्योंकि स्तुई से हमें डर लगता है।
- हाँ वैक्सीन लगाई जा रही है। वैक्सीन को लगाने से महामारी को रोका जा सकता है।
- हाँ मास्क लगाना होगा क्योंकि मास्क लगाने से हम सुरक्षित रहते हैं और दूसरों को भी सुरक्षित रख सकते हैं।

✳ रोहन पटेल,
कक्षा-6, गांव डंमरी,
पड़ाव, ऊँ भगद गुरुद
जनार्द स्वामी मौन बिरानी
महाराज जू. हर्ट स्कूल।



हाँ जी, वैक्सीन के बाद मास्क डालना होगा। जरूरी है क्योंकि प्रदूषण से बचे रहेंगे। हवा में फैले वायरस से भी बचेगें।

✳ आयुष निषाद,
कक्षा-3, गांव सूजाबाद
पड़ाव, वाराणसी
स्कूल : बाल शिक्षा निकेतन



टीका लगाने के बाद मास्क लगाना होगा जरूरी। कारण
① टीका लगाने के बाद भी हो सकता है कोरोना इसलिए मास्क लगाना जरूरी है।

② क्योंकि अभी भी खतरा टना नहीं है। कोविड की तीसरी लहर भी आ चुकी है जो बच्चों के लिए ज्यादा खतरनाक है।

③ मास्क का प्रयोग अन्य विमारियों से भी सुरक्षा देगा।

④ बच्चों को तीसरी लहर से बचाने के लिए मास्क का प्रयोग जरूरी है। ✳ सुशी, कक्षा-12, रा.उ.अर्द्ध इन्टर कॉलेज, नागधात, कातसी, दे.दून



पृष्ठ सं-6 का शेष भाग....

- ① बच्चों को आने वाले समय में इस विमारी से बचाने के लिए यह वैक्सीन लगाई जा रही है।
- ② इस वैक्सीन से डेंगू जैसी अन्य विमारियों को भी रोका जा सकता है इसलिए ये वैक्सीन लगाई जा रही है।

✳ इशांका, कक्षा-11, ग्राम दिना
एकतण्य वि०, कातसी ब्लाक, दे.दून

कविता

मैं शिक्षक हूँ

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः
गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म
तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥

अधुरे सुर सजाने को साज बनाता हूँ,
नौ सिरिखे परियों को बाज बनाता हूँ।
चुपचाप सुनता हूँ शिकायतें सबकी,
तब दुनिया बदलने की आवाज बनाता हूँ।

समुद्र तो परखता है हाँसते कश्तियों के,
और मैं डूबती कश्तियों को जहाज बनाता हूँ।
बनार चाहे चांद ये बर्ज र खलीफा,
अरे मैं कच्ची ईंटों से ही ताज बनाता हूँ।
हूँ मेरा मजहब जाके इन किताबों में,
मैं तो इन्हीं से आरती नमाज बनाता हूँ।
ना मुझसे सीखने आना जंतर जुगाड़ के,
अरे मैं तो मेहनत लगान के रिवाज बनाता हूँ।
मजहबी - उमोतिषी द्योड़ दो तारों को ताकना तुम,
हैं जो आने वाला कल उसे मैं आज बनाता हूँ।
सभी शिक्षकों को
समर्पित (साभार)

चुटकुले

पुलिस दरवाजा खटखटाते हुए...
पुलिस : हम पुलिस हैं दरवाजा खोलो।

पप्पू : क्यों खोलू ?
पुलिस : क्योंकि हमें कुछ बात करनी है।

पप्पू : तुम लोग कितने हो ?

पुलिस : हम 3 हैं।

पप्पू : तो आपस में बात कर लेना। मेरे पास टाइम नहीं है।

* मानसी भण्डारी
कक्षा -3, G.I. College
मियावाला, देहरादून

पहेलियाँ

* मुखराज सिंह
कक्षा -4,
गंगा नदी,
जालंधर

1) वो क्या है जो आपके सोते ही नीचे गिर जाती है और आपके उठते ही वो भी उठ जाती है ?

2) ऐसी कौन सी चीज है जो बच्चे को जवान और जवान को बूढ़ा बना देती है ?

3) एक व्यक्ति अपनी जिन्दगी में सबसे ज्यादा बार क्या सुनता है ?

4) वो क्या है जिसे आप एक बार खाकर वापिस नहीं खाना चाहते मगर फिर भी खाते हैं ?

हिमालय दिवस

9 सितंबर 2021

हिमालय राज हमें हवा, मिट्टी, पानी, जंगल ही नहीं देता है बल्कि हमारे देश को पहचान भी देता है। यह मुकुट है हमारा जिसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी हम सबकी है। ग्लोबल वार्मिंग, मौसम परिवर्तन जैसे मुद्दों से हिमालय भी अछूता नहीं। देश की सुरक्षा, पारिस्थितिकी तथा संस्कृति का प्रतीक है पर्वतराज हिमालय।

1. कौन सा पर्वत है जो हमारे देश की पहचान देता है ?

2. हिमालय का कुल लंबाई कितनी है ?

3. हिमालय का सबसे ऊँचा पर्वत कौन सा है ?

4. हिमालय का सबसे बड़ा झील कौन सी है ?

5. हिमालय का सबसे बड़ा नदी कौन सी है ?

6. हिमालय का सबसे बड़ा झील कौन सी है ?

7. हिमालय का सबसे बड़ा झील कौन सी है ?

8. हिमालय का सबसे बड़ा झील कौन सी है ?

9. हिमालय का सबसे बड़ा झील कौन सी है ?

10. हिमालय का सबसे बड़ा झील कौन सी है ?

BOOK POST CONTAINING PERIODICALS

हिमालयी बच्चों का अखबार

RNI NO. UTTHIN/2003/10745

सेवा में,

स्वामी मुद्रक व प्रकाशक डॉ अनिल प्रकाश जोशी द्वारा शिखर इन्टरप्राइजेज सत्यभामा निवास, तरुण विहार देहरादून मोबाइल: 9412007313 से मुद्रित तथा हैस्को ग्राम शुक्लापुर, पो.ऑ.-अम्बीवाला, वाया प्रेमनगर, देहरादून से प्रकाशित।

सम्पादक : डा. सुधा कबटियाल
पता : डा. सुधा कबटियाल
ग्राम-मियावाला, पो.ऑ.-हरावाला,
देहरादून-248001

सहयोग टीम : समस्त बच्चे

हमारा पता : बच्चों का अखबार
हैस्को गाँव
ग्राम शुक्लापुर, पो.ऑ.-अम्बीवाला,
वाया प्रेमनगर, देहरादून-248001

सीमित प्रचार प्रसार हेतु